गाजीपुर जनपद के अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

पं. विश्वनाथ शर्मा

स्मृति ग्रन्थ

सम्पादक
डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र
विश्वविमोहन शर्मा

प्रमथ्यु प्रकाशन

55-डी वेल्वेडियर कम्पाउण्ड, मोतीलाल नेहरू रोड, एलनगंज
प्रयागराज-211002

गाजीपुर जनपद के अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

पं. विश्वनाथ शर्मा

ISBN	:	978-81-950245-5-1
प्रकाशक	:	**प्रमथ्यु प्रकाशन** 55-डी वेल्वेडियर कम्पाउण्ड, मोतीलाल नेहरू रोड, एलनगंज प्रयागराज-211002
फोन	:	9415000489
ईमेल	:	pramathyuprakashan1@gmail.com
©	:	**संपादक**
प्रथम संस्करण	:	**2022**
मूल्य	:	**₹ 280.00**
लेजर टाइपसेटिंग	:	**अमन कम्प्यूटर,** बेनीगंज, प्रयागराज
मुद्रक	:	**ग्राफिक क्रियेशन्स** प्रयागराज-211002

जिनके जीवन में राष्ट्रहित ही सर्वोपरि है : पं. विश्वनाथ शर्मा

डॉ. निरंजन

भारत की मिट्टी में वह प्रताप है जिसके चलते समय-समय पर ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया जिनके कर्म सुवास से यह देश सुभाशित होता रहा है। जीवन की सादगी और आचरण की पवित्रता इस देश की पहचान है। सनातन से लेकर आधुनिक समय तक ऐसे महा मानवों की एक लम्बी श्रृंखला है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है। भारतीय समाज एवं राष्ट्र के उत्थान हेतु अपना सर्वस्व न्योछावार किया है। परहित के लिए स्व के हित का त्याग किया है। गाजीपुर की राजनीति में पं.विश्वनाथ शर्मा का व्यक्तित्व ऐसा ही है। उनकी देश के प्रति जो आस्था थी वह अनुकरणीय है। वह अपने जीवन चरित के माध्यम से आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत से सबक छोड़ गये हैं। यदि आज भी हर नेता उनके आदर्शों पर चलना सीख ले तो वह दिन दूर नहीं जिसकी कल्पना 'सुराज' के रूप में गाँधी किया करते थे।

यह वर्ष आजादी का 'अमृत महोत्सव' मनाने वाला वर्ष है। यह उन स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का वर्ष है जिनका नाम इतिहास में दर्ज नहीं है। जिन्होंने अपने त्याग, समर्पण एवं संघर्ष से राष्ट्र उन्नयकों (गाँधी, सुभाष, भगत सिंह आदि को) को ताकतवर बनाया। उन सबको याद करने का यह वर्ष है। इसलिए इस कार्यक्रम को पूरे देश में मनाया जा रहा है। गाँव से लेकर देश तक इस कार्यक्रम की व्याप्ति है। ऐसे में पुनः एक बार उन परिवारों की तलाश की जा रही है। जिनके पुरखें स्वतन्त्रता संग्राम में अपना योगदान दिया था। यह कार्य जितना गौरव शाली है, उतना ही जटिल भी। जिन परिवारों ने अपने पुरखों की यादों को परम्परा की थाती समझ कर उसे आने वाली पीढ़ियों को हस्तान्तरित करती रहीं उनके स्रोत मौजूद हैं। लेकिन जिन लोगों ने अपने पुरखों के त्याग, समर्पण एवं संघर्ष जैसे मूल्यों को अनुपयोगी मानते हुए उन्हें

कोसते रहे वह समय के
पारिवारिक मूल्यों को संज
विश्वविमोहन शर्मा जी को
पिता पं.विश्वनाथ शर्मा जी
रूप से उनकी आत्मा धन्य
की स्मृतियों को संजोया ह
किया है। इनके पं.विश्वन
सामाजिक एवं आर्थिक स्थि
राय का बहुत मान सम्मान
कोई अच्छी सी नौकरी कर
आगे की शिक्षा के लिए क
सब कुछ मौजूद था। लेकिन
कार्य कैसे कर सकता है! व
सच्चे सिपाही थे। उनके अ
अवसर पाते ही प्रकट होने
कलकत्ता में होता है। वहीं
यह महात्मा गाँधी के विचार
छोड़कर 'असहयोग आन्दो
सच्चाई की गहरी छाप इनप
आजीवन गाँधीवादी मूल्यों के
कहें तो अतिशयोक्ति नहीं

गाँधी का अनुयायी हो
बातें हैं। प्रायः यह देखने मे
विचारधारा का अभाव रहत
की उज्ज्वलता आदि को अ
वह गाँधी का अनुयायी ही
हैं। राजनीति में यह विरोध
यहाँ ऐसा कोई विरोधा भाष
हैं। गाँधीवादी विचारधारा
हुए बार-बर लगता है कि उ
हम इस बात को दूसरे ढंग
ही है जो जीवन के कठिन
जिसके सहारे वह लोकोन्मु
आजीवन चिंतित रहे।

जी थे। जिन्होंने अपने क्षेत्र की जनता हेतु अनेक कल्याणकारी कार्य किया। जैसे स्कूल खुलवाया, अस्पताल बनवाया, आवागमन की सुविधा-असुविधा को ध्यान में रखते हुए भाँवर कोल में ब्लाक स्थापित करवाया इत्यादि। विकास का मतलब सिर्फ सड़क बनाना या विभागों की बिल्डिंग बनवाना नहीं होता। विकास का सही अर्थ होता है स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था का सुदृढ़ होना। इसीके माध्यम से रामराज्य की संकल्पना पूरी की जा सकती है। गाँधी जी जिस आजाद भारत का सपना देखा था पं.विश्वनाथ शर्मा उसे आजीवन साकार करने के लिए संकल्पित रहें। इसलिए वह बराबर सरकार द्वारा मूर्खता पूर्ण लिए गये निर्णयों की आलाचना करते रहे। और समय-समय पर सरकार को चेताते रहे कि इस तरह के निर्णय लेने से सरकार को वचना चाहिए। हमारे देश को ऐसे विकास की आवश्यकता नहीं है कि जनता ही चीख पड़े। विकास का प्रतिकर जनता से ही वसूलकर लिया।

शर्मा जी का मानना था कि राज्य की संकल्पना तभी पूरी होगी जब जनता सुखी होगी 'तुलसीदास ने लिखा है कि "जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवसिं नरक अधिकारी'। शर्मा जी कांग्रेसी थे। लेकिन उनकी विचारधारा राष्ट्रवादी था। वह रामराज्य के प्रबल पैरोकार थे। वह इस बात को बहुत पहले ही भाँप गये थे कि जब तक भ्रष्टाचार रूपी रावण जिन्दा रहेगा तब तक रामराज्य की संकल्पना कोई भी यज्ञ पूरा नहीं कर सकता। इसलिए सबसे बहले भ्रष्टाचार को खत्म करना होगा। बिना भ्रष्टाचार को खत्म किये विकास का हर वादा झूठा है।

शर्मा जी समय-समय पर भारतीय राजनीति के भविष्य पर भी चिन्ता प्रकट करने वाले मनीषी थे। उन्होंने अपने भाषणों के माध्यम से आने वाले समय की राजनीति कैसी होगी? यह भी बताते थे। कथनी और करनी का भेद जब तक बरकरार रहेगा तब तक सुशासन, सुराज, समाजवाद पर सिर्फ हम नारे बाजी कर सकते हैं लेकिन वह धरातल पर चरितार्थ नहीं होगा। शर्मा जी ऐसे राज नेता थे जिनका मानना था कि सरकार को सरकार बनाकर देश पर राज नहीं करना चाहिए क्योंकि यह प्रवृत्ति उसे निरंकुशता प्रदान करती है। उसे सत्ता में रहते हुए भी जन प्रिय बने रहना चाहिए। जिससे जनता को यह यकीन रहे की यह उसकी सरकार है। आजाद भारत में आजाद लोगों की सरकार हैं। ऐसे राजनीतिज्ञों से आज भी हमारे देश के राज नेताओं को बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। जिनके जीवन में स्व का नहीं राष्ट्र का महत्त्व सर्वोपरि था।

मो: 8726374017